(Q 5)

विश्व ऊर्जा संकट क्या है? इस संकट से निर्मित होने वाले प्रमुख घटकों की चर्चा करें। इस संकट का कैसे निराकरण किया जा सकता है।

ऊर्जा आर्थिक विश्व आर्थिक विकास का आधार है। कोई भी देश तब तक उन्नति नही कर सकता जब तक उसके पास ऊर्जा के पर्याप्त संसाधन न हों। मानव प्राचीन काल से ही ऊर्जा का प्रयोग कर रहा है। पहले जनसंख्या कम थी और मानव की आवश्यकताएँ सिमीत थी। जनसंख्या बढ़ते ही मानव की आवश्यकता बढ़ने के साथ ऊर्जा का माँग भी बढ़ने लगा।

विश्व की बढ़ती ऊर्जा की माँग पर कुक महोदय ने अपनी पुस्तक The flow of Energy in an Industrial society के माध्यम से एक तालिका में दर्शाने की कोशिश की गई कि ऊर्जा की माँग वृद्धि निम्न प्रकार से हुई है —

सभ्यता स्तर →	ऊर्जा की माँग प्रति व्यक्ति दिन (K.cal में)
1. प्राचीन मानव (आग पर नियं. के पूर्व)	2000 K.cal
2. शिकारी मानव	4000 K.cal
3. प्राथमिक कृषक	12,000 K.cal
4. तकनीकी मानव	23,0000 K.cals

ऊर्जा की इस बढ़ती माँग का प्रभाव इसके संचित भंडार, उत्पादन और वितरण पर पड़ा है और इसकी अभिव्यक्ति ऊर्जा संकट के रूप में हुई है।

Scanned with CamScanner

ऊर्जा संकट का कारण ——

1) वाणिज्यिक ऊर्जा के संचित भंडार का कम होना :—

आज भी ऊर्जा के कुल स्रोतों का 95% भाग जीवाश्म ऊर्जा स्रोत द्वारा प्राप्त किया जाता है। चूँकि जीवाश्म ईंधन का एक बार प्रयोग के बाद इसका पुनः प्रयोग नहीं हो सकता अतः इसके वैकल्पिक ऊर्जा की दरकार है; नहीं तो ऊर्जा संकट पैदा हो जाएगी।

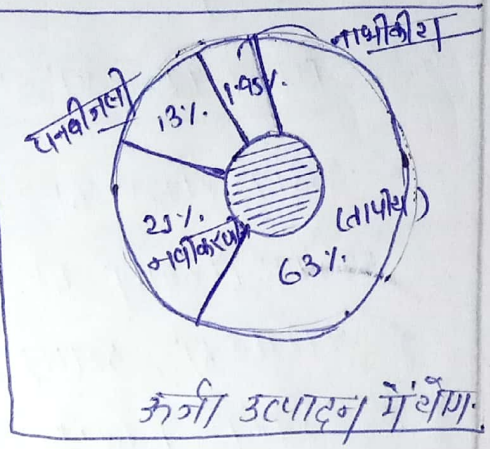

ऊर्जा उत्पादन में योगदान

2) ऊर्जा के संचित भंडार का असमान वितरण :—

- ऊर्जा संकट का कारण ऊर्जा का असमान वितरण से है।
- कोयले का अधिकतम संचित भंडार China, रूस, USA और कनाडा में पाया जाता है।
- पेट्रोलियम का संचित भंडार और उत्पादन मध्य-पूर्व के कई देशों में ही है जो निर्यातक भी है।

चित्र :- संचित भंडार

3) पेट्रोलियम की राजनीति :—

- अरब-इजराइल युद्ध के संदर्भ में अरब देशों द्वारा पेट्रोलियम के मूल्य में अप्रत्याशित वृद्धि करने से

Scanned with CamScanner

लगभग स्थायी रूप से ऊर्जा संकट उत्पन्न होती है।
(3 डॉलर / बैरल से 43 डॉलर / बैरल)

- पेट्रोलियम की राजनीति अब भू-राजनीति में बदल गई है।

4. विकसित देश द्वारा ऊर्जा संरक्षण की नीति —

- ऊर्जा संकट का कारण कई ऊर्जा सम्पन्न देशों द्वारा ऊर्जा संरक्षण की नीति अपनाया जाना है।
- अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, ब्रिटेन आदि ऐसे देश हैं जहाँ किसी-न-किसी रूप में पर्याप्त ऊर्जा संसाधन उपलब्ध हैं लेकिन ये इन्हें संरक्षित रखते हुए पेट्रोलियम का आयात करते हैं।

ऊर्जा संकट का निराकरण —

1) ऊर्जा संकट के समाधान हेतु अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी आवश्यक है। तेल निर्यातक देशों के लिए आवश्यक है कि गरीब देशों को दीर्घकालिक ऋण के आधार पर विशेष आर्थिक छूट के साथ पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक ~~इस~~ गैस की आपूर्ति करे।

2) विकसित देशों को यह आवश्यक है कि वह विकासशील देशों को इस कार्य हेतु पूँजी एवं तकनीक अपनाए।

3) ऊर्जा संकट दूर करने की दिशा में नए स्रोतों की खोज भी आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

iii) नए क्षेत्रों की खोज के लिए सुदूर संवेदन सूचना प्रणाली का अधिक-से-अधिक उपयोग किया जाता है।

iv) चौथी आवश्यकता ऊर्जा खपत में शिथिलता की है। पश्चिमी देशों में इसे प्राथमिकता दी गई है।

v) परिवहन के दौरान ऊर्जा की बर्बादी को भी कम करने की आवश्यकता है।

vi) ऊर्जा के अन्य स्रोत जैसे - नवीकरणीय ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा आदि को बढ़ाना देने से भी ऊर्जा संकट से निपटा जा सकता है।

निष्कर्ष किसी भी राष्ट्र की विकास की अभिव्यक्ति ऊर्जा की पूर्ति पर ही टिकी होती है जिस राष्ट्र के पास जितनी ऊर्जा संसाधन है वह देश उतनी ही संपन्नता को हासिल करेगा।

Scanned with CamScanner

section-1 Economical Geo. →

आर्थिक विकास के वैश्विक सूचकांकों की व्याख्या कीजिए और विकास के वैश्विक प्रारूपों का विश्लेषण कीजिए।

आर्थिक विकास के स्तर का मापन सामान्यतः प्रति वार्षिक आय से लगाया जाता है। जिन देश के लोगों की प्रति व्यक्ति आय अधिक होती है, उसकी कुछ विशेषताएं यथा निम्न जनसंख्या वृद्धि, उच्च जीवन-प्रत्याशा और बेहतर जीवन स्तर इत्यादि स्पष्टतया दिखाई देती है। आर्थिक विकास के स्तर के आधार पर विश्व में चार प्रकार की अर्थव्यवस्था पाई जाती है ——

A.) विकसित अर्थव्यवस्था —— इस प्रकार की विशेषता मुख्यतः पश्चिमी यूरोप, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि में पाई जाती है। इन देशों की प्रमुख विशेषताएं ——

i) उच्च प्रति व्यक्ति आय — ये सभी देश मिलकर विश्व की जनसंख्या का 25% तथा GDP का 75% हिस्सा रखते हैं।

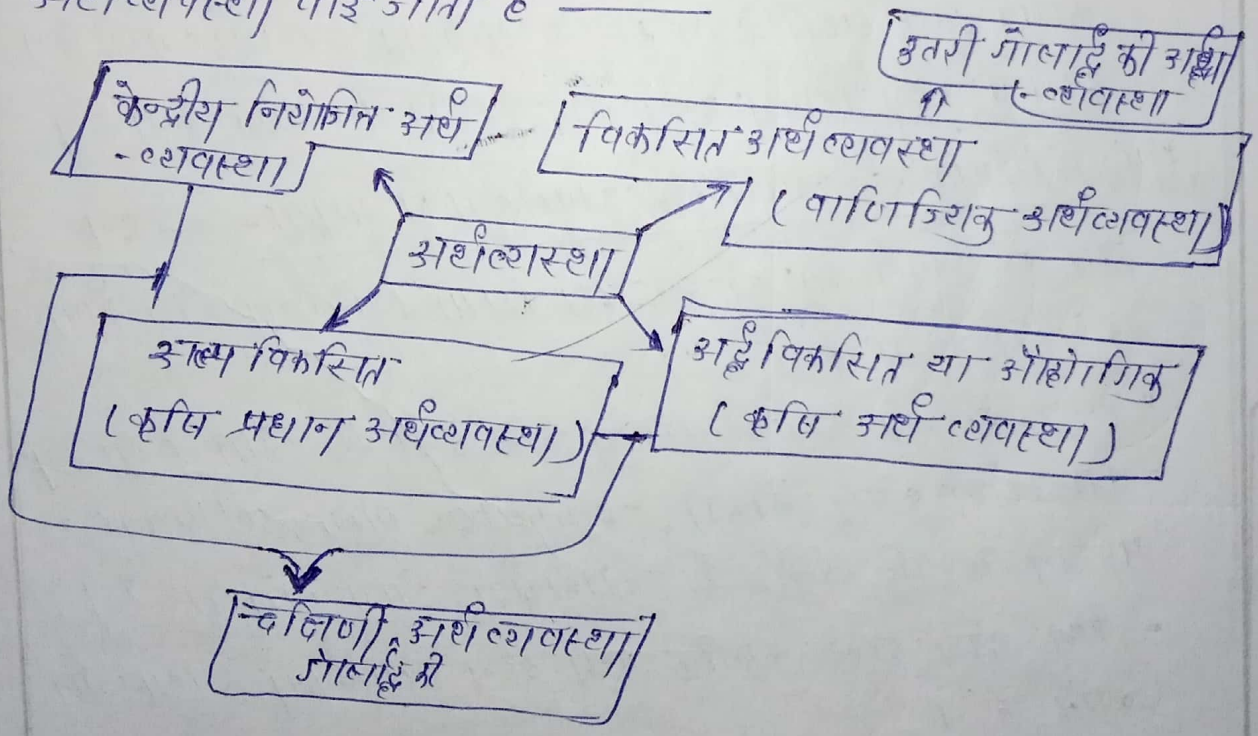

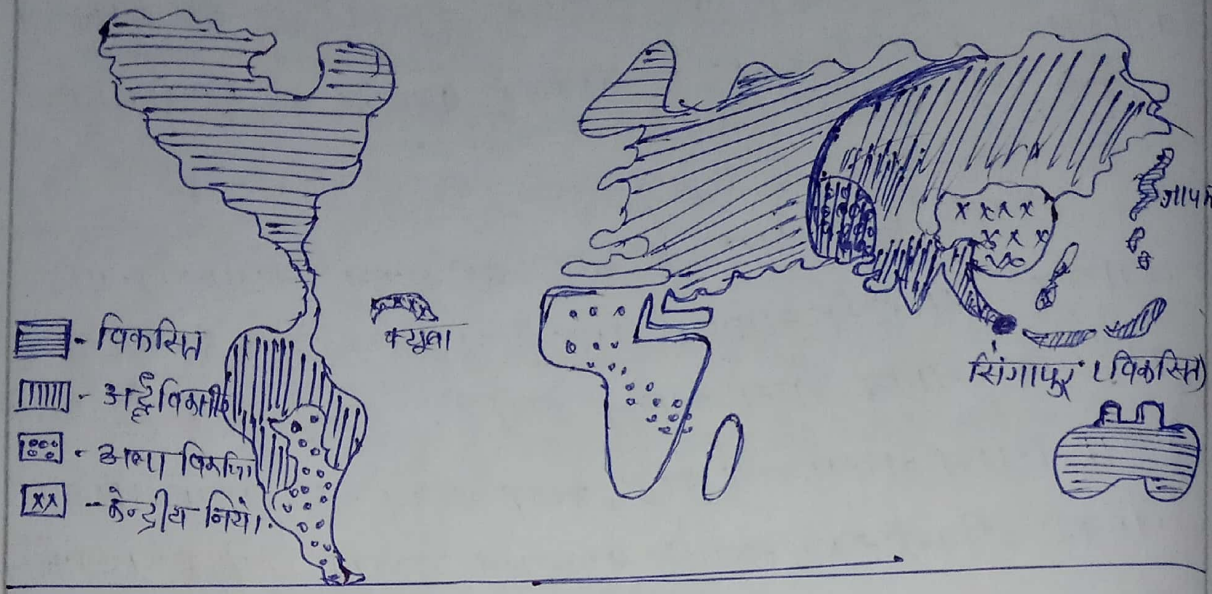

(ii) आर्थिक विकास की बहुत ऊँची दर :— उच्च आय के कारण, इन सभी देशों में उच्च बचत दर पाई जाती है। अतएव उच्च निवेश उच्च वृद्धि दर को निर्धारित करता है।

(iii) औद्योगिक - वाणिज्यिक जनशक्ति का प्रभुत्व — इन देशों में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में लगा हुआ है।

- 20% से भी कम जनसंख्या कृषि कार्य में लगा हुआ है।
- अधिकांश लोग बैंकिंग, computer, बीमा, software प्रबंधन इत्यादि कार्यों में अधिकांश लोग लगे हुए हैं।
- कृषि क्षेत्र उच्च तकनीक तथा उच्च उत्पादकता के लिए जाने जाते हैं।
- निर्यात के लिए अधिकांश उत्पादन होता है।

(iv) विश्व व्यापार में बड़ी भागीदारी —

- विश्व के कुल आयात में इनकी भागीदारी 70% है। अकेले USA की भागीदारी 12% है।
- कुल निर्यात में 60% और USA की भागीदारी 17% है।

Scanned with CamScanner

(v) उच्च शहरीकरण :— अधिकाँश जनसंख्या उद्योग और वाणिज्य में भागीदारी की वजह से यहाँ कई बड़े शहरों का...

(vi) उच्च जीवन एवं स्वास्थ्य स्तर :— उच्च जीवन प्रत्याशा और निम्न जन्म दर से कार्यशील जनसंख्या % उँचा है।

B. अर्द्धविकसित (कृषि अर्थ०) —

इसमें शामिल देश — दक्षिण अफ्रीका, अर्जेंटीना आदि।

उच्च औद्योगीकरण के स्तर के कारण — ये सभी देश अपनी नियोजित अर्थव्यवस्था को बाजार आधारित अर्थव्यवस्था में बदल रहे हैं।

C. अल्प विकसित (कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था) :—

शामिल देश — जापान व सिंगापुर को छोड़कर शेष एशियाई देश तथा दक्षिण अमेरिकी देश आदि।

विशेषता — कम प्रति व्यक्ति आय, कृषि का जनसंख्या का अधिकत्व, विश्व व्यापार में इसकी कम भागीदारी, ग्रामीण जनसंख्या का प्रभुत्व आदि।

D. केन्द्रीय नियंत्रित अर्थव्यवस्था —

इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में उत्पादन के कारकों पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण होता है।

- कोर क्षेत्र जैसे लौह - इस्पात, रसायन, नाभिकीय शक्ति विद्युत - खनन ~~शक्ति~~ इत्यादि पर मुख्य बल दिया जाता है।
- शामिल देश — चीन, क्यूबा, उत्तरी कोरिया, उत्तरी विएतनाम।

Scanned with CamScanner

विकसित और विकाशसील देशो के मध्य आई विभेद और समस्याओं को निम्न तरीको से दूर किया जा सकता है:-

i) विकासशील देशो की राजनीती में हस्तक्षेप किए बगैर विकसित देशो द्वारा उने आर्थिक सहायता दिया जाना चाहिए।

ii) धनी देशो से निर्धन देशो को तकनीकी सहायता (स्थानांतरण)

iii) आधारभूत संस्थाओं के लिए तकनीकी व वीतिय दोनो सहायता प्रदान किया जाना।

(iv) विकसित राष्ट्रो को फिजुलखर्ची कम करना चाहिए और सतत विकास की मूल आधार को स्वीकार करना चाहिए।

(v) अन्तर्राष्ट्रीय वीतिय संस्थानो का ~~संभीकरण~~ प्रजातंत्रीकरण अधिक होनी चाहिए।

इस प्रकार विकसित देशो द्वारा अर्द्धविकसित या अल्पविकसित देशो को सहायता प्रदान कर विश्व में व्याप्त असमानता की खाई को दूर किया जा सकता है।